संयोजक समिति

मुख्य संरक्षक

स. चिरंजीव सिंह ग्रेवाल
अध्यक्ष, गुरु नानक पब्लिक स्कूल सभा

संरक्षक

स. अमरपाल सिंह पाहवा
सचिव, गुरु नानक पब्लिक स्कूल सभा

अध्यक्ष

प्रो. अनिल कोठारी
प्राचार्य, गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

संयोजक
डॉ. रंजना आमेटा
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग

सह-संयोजक
डॉ. मीना नागदा
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

डॉ. रंजीता खतुरिया
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

श्रीमती दिव्या जैन
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

आयोजन सचिव
डॉ. हर्षलता पंड्या
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

डॉ. डिम्पल कौर
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

आयोजन सह-सचिव
श्रीमती रूचि पालीवाल
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

श्रीमती हुमैरा खान
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

श्रीमती तस्लीम नाज़ सिन्धी
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग

आयोजन समिति
डॉ. स्वाति भाटी, समाजशास्त्र विभाग
डॉ. अनीता पालीवाल, लोक प्रशासन विभाग
डॉ. अलका जैन, वनस्पति विज्ञान विभाग
श्रीमान अनिल चतुर्वेदी, हिन्दी विभाग
श्रीमती उम्मेहानी हितावाला, भौतिक शास्त्र विभाग
डॉ. सपना जैन, रसायन शास्त्र विभाग
डॉ. भगवती नागदा, इतिहास विभाग
डॉ. अंजना पुरोहित, मनोविज्ञान विभाग
डॉ. अनुराधा मालवीय, अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. पुष्पा शर्मा, संस्कृत विभाग
डॉ. मीनल कोठारी, वनस्पति शास्त्र विभाग
डॉ. श्वेता जैन, वाणिज्य विभाग
डॉ. सत्येन्द्र बारबर, प्राणी शास्त्र विभाग
डॉ. रोड सिंह देवड़ा, भूगोल विभाग
डॉ. पूर्वी भूतालिया, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग
डॉ. सोनिका गुर्जर, अंग्रेजी विभाग

तकनीकी समिति
डॉ. कीर्ति आमेटा, डॉ. मीना नागदा, डॉ. रोड सिंह देवड़ा, श्री चन्द्रदीप सिंह राजावत, श्री तोसिफ शेख

मीडिया समिति
डॉ. हर्षलता पंड्या, डॉ. सिम्मी सिंह, डॉ. आरती आमेटा, डॉ. रश्मि मनोज, श्री लोकेश डांगी

संपर्क सूत्र
श्रीमती रूचि पालीवाल
8949414248

डॉ. डिम्पल कौर
8209512957

श्रीमती हुमैरा खान
9571720414

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि

रजिस्ट्रेशन एवं शोध सारांश जमा करने की-15 फरवरी, 2025
शोध पत्र/आलेख जमा करने की- 25 फरवरी, 2025

पंजीयन शुल्क :-
शिक्षाविद एवं अतिथि विद्वानः–1000/-
शोधार्थीः-700/-
Account Name- GURU NANAK GIRLS COLLEGE, UDAIPUR
BANK NAME- ICICI BANK, BRANCH :- GNPS
Account No.- 693501085756
IFSC CODE-ICIC0006935
या आप इस QR CODE द्वारा Phone Pe/PAYTM UPI/BHIM/GOOGLE PAY के माध्यम से भी भुगतान कर सकते हैं।

पंजीकरण विवरण

सभी शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, विद्वानों और छात्रों के लिए खुला है।
प्रतिभागी नीचे दिए गए लिंक पर जाकर और आवश्यक विवरण भरकर सेमिनार के लिए पंजीकरण करें।
पंजीकरण लिंकः
https://forms.gle/vUz1Pd7fyLrDbWgQ8
व्हाट्सएप ग्रुप से जुड़ें:
https://chat.whatsapp.com/K4dewxlBvsWB7rjaETETXw

शोध पत्र/आलेख प्रकाशन हेतु निर्देश

आप अपना शोध सारांश एवं शोध पत्र हिंदी में फॉन्ट कृतिदेव 010 (साइज़ -14) अथवा अंग्रेजी में फॉन्ट टाइम्सन्यूरोमन (Times news Roman) (साइज़-12) में टाइप करवाकर Email Id- gngceducation2017@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें| सेमिनार से पूर्व ही शोधपत्र की हार्ड-कॉपी (02 प्रतियों) प्रस्तुत करें|शोधपत्र पूर्व में प्रकाशित अथवा किसी अन्य सेमिनार में वाचित नहीं होना चाहिए|

शब्द सीमा-
शोध सारांश – 300 शब्द
शोध पत्र/आलेख– 2500-5000 शब्द

नोट

चयनित शोध पत्रों व आलेखों को आईएसबीएन न. (ISBN NO.) सहित शोध पुस्तक में प्रकाशित किया जायेगा| (अतिरिक्त शुल्क देय होगा)
एक शोध पत्र के दो से अधिक लेखक मान्य नहीं है|
संयुक्त शोध पत्र में प्रत्येक लेखक को अपना स्वयं का पंजीकरण करना अनिवार्य है|
लेखक परिचय–लेखक का पूरा नाम, पद, संस्थान का नाम, मोबाइल न., और मेल आई डी आदि शोध पत्र के प्रथम पेज पर लिखे|
शोध पत्र के अंत में सन्दर्भ साहित्य का विवरण देना अनिवार्य है|
सेमिनार के पश्चात भागीदारी प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।
दोपहर के भोजन एवं जलपान की व्यवस्था महाविद्यालय द्वारा की गई है|
आवास व्यवस्था हेतु सम्पर्क सूत्र पर दिये गये नम्बर पर सम्पर्क करें|

Since-1997

राष्ट्रीय सेमिनार

"भारतीय ज्ञान परम्परा–अतीत से वर्तमान तक"

6-7 मार्च 2025

(HYBRID MODE)

आयोजक

गुरू नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

(संबद्ध-मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर)
NAAC 'A' ग्रेड मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय
(www.gurunanakgirlscollege.com)

सेमिनार स्थल

सेमिनार हॉल
गुरू नानक कन्या स्नातकोत्तर महविद्यालय, हिरण मगरी सेक्टर-4
उदयपुर, राजस्थान -313002

आमंत्रण

गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,उदयपुर द्वारा 6-7 मार्च 2025 को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन होना प्रस्तावित है। जिसकी मेजबानी करते हुए हम गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। यह सेमिनार "भारतीय ज्ञान परंपरा–अतीत से वर्तमान तक", पर संवाद के लिए एक मंच प्रदान करेगा। हम आपको इस सेमिनार में भाग लेने और परिभाषित विषयों और उप विषयों पर आधारित तकनीकी सत्रों में शोधपत्र प्रस्तुत करने और पूरे भारत से शिक्षाविदों, प्रख्यात विद्वानों, प्रबंधन, पेशेवरो, शोधकर्ताओ और प्रतिष्ठित वक्ताओं के साथ बातचीत करने के अवसर का लाभ उठाने के लिए सादर आमंत्रित करते है।

उदयपुर - एक नज़र

झीलों की नगरी उदयपुर, राजस्थान का एक ऐतिहासिक शहर है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता, महलों की नक्काशी तथा झीलों के चारों ओर सुंदर रूप से बसे हुए होने से उदयपुर को पूर्व का वेनिस भी कहा जाता है। यह शहर अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के कारण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व पटल पर एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। विश्व के सुंदरतम शहरों में शुमार उदयपुर शहर की स्थापना 1559 ईस्वी में महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा की गई। भौगोलिक दृष्टि से उदयपुर शहर राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह चारों ओर हरी- भरी अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ है। समुद्र तल से यह 598 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इसलिए यहां का मौसम हमेशा खुशनुमा रहता है। मेवाड़ी आन बान के प्रतीक उदयपुर ने राजपूती संस्कृति, कला और परंपराओं को संरक्षित रखा है। यहां के महल, किले, झीले और मंदिर इसके गौरवशाली अतीत का प्रतीक है। इस शहर की अर्थव्यवस्था मुख्यतः पर्यटन, हस्तशिल्प, मार्बल और जिंक खनन पर आधारित है। यह शहर अपनी सतरंगी संस्कृति और पारंपरिक हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है । यहां के लोक नृत्य और संगीत पूरे भारत में प्रसिद्ध है। इस शहर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गुलाब बाग, दूध तलाई, शिल्पग्राम, सज्जनगढ़, प्रताप गौरव केंद्र, मोती मगरी, जगदीश मंदिर, सहेलियों की बाड़ी, बागोर की हवेली, करणी माता का मंदिर, फतेहसागर तथा पिछोला झील है।

महाविद्यालय एक परिचय

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी गुरू नानक शिक्षण संस्थान उदयपुर संभाग का एक अनूठा संस्थान है। झीलों की नगरी उदयपुर में गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की स्थापना 1997 में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण के मिशन और दृष्टिकोण के साथ की गई थी। विशेष रूप से क्षेत्र की वंचित, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी लड़कियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यह एक स्व-वित्तपोषित कॉलेज है जिसका स्वामित्व और प्रबंधन गुरु नानक पब्लिक स्कूल सभा, उदयपुर के द्वारा किया जाता है। यह महाविद्यालय मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से संबद्ध है। विद्यार्थियों के लिए अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशालाएं ,हवा एवं रोशनी से भरपूर बड़े-बड़े कक्षा-कक्ष हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों का श्रेष्ठ संचालन एवं छात्राओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यता, परंपराओं और विरासत पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा प्रदान की जाती है। इसी तरह विभिन्न क्लबों के माध्यम से नेतृत्व समूह कार्य, विश्लेषणात्मक, रचनात्मक सोच व सीखने के कौशल को विकसित किया जाता है। महाविद्यालय में छात्राओं के स्वास्थ्य और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। अधिस्नातक करने के बाद छात्राओं के शोधकार्य(पीएच.डी.) हेतु हिन्दी,समाजशास्त्र व मनोविज्ञान विषय के संकाय के सदस्य शोध निर्देशक के रूप में मार्गदर्शन कर रहे हैं ।

महिला उच्च शिक्षा का यह मंदिर छात्राओं में संकल्प, संघर्ष, मेहनत, सफलता और जीवटता का मूल मंत्र प्रदान करता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केंद्रित किया। कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए (सा विद्या या विमुक्तये)। इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तद्नुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था तब संपूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर संपूर्ण मानव बनाते थे। इन्ही परम्परागत आदर्शों एवं ज्ञान को समाज मे पुर्नस्थापित करने के उद्देश्य से दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

सेमिनार के उद्देश्य :-

1. भारतीय ज्ञान परम्परा के इतिहास और विकास को समझना।
2. वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना।
3. भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख सिद्धांतों और अवधारणाओं को समझना।
4. भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रभाव को वर्तमान शिक्षा प्रणाली और समाज पर समझना।
5. भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व को पहचानना और उसके संरक्षण के लिए सुझाव देना।
6. मध्यकालीन और आधुनिक काल में भारतीय ज्ञान परम्परा के विकास को समझना।

उपविषयः-

1. भारतीय ज्ञान परम्परा में दर्शन शास्त्र एवं आध्यात्मिकता
2. भारतीय ज्ञान परम्परा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का समन्वय
3. आधुनिक सन्दर्भ में भारतीय गुरुकुल प्रणाली की प्रासंगिकता
4. समकालीन सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता
5. भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा एवं साहित्य
6. भारतीय ज्ञान परम्परा में कला और संस्कृति
7. भारतीय ज्ञान परम्परा में भूगोल, कृषि एवं पर्यावरणीय चेतना
8. भारतीय ज्ञान परम्परा में सामाजिक एवं राजनीतिक शास्त्र
9. भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रबंधन एवं अर्थशास्त्र
10. भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वास्थ्य,योग एवं चिकित्साविज्ञान
11. भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
12. समाज और राष्ट्र निर्माण में भारतीय ज्ञान परम्परा का योगदान

उपर्युक्त विषय व उपविषय से सम्बंधित सभी संकायों के शोध पत्र आमंत्रित है।

मुख्य वक्ताः उद्घाटन सत्र

प्रो. बी.पी. शर्मा
समूह अध्यक्ष, पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर
सभापति, यूनेस्को, MGIEP

राष्ट्रीय सलाहकार मंडल

प्रो. के. सी. सोडाणी कुलपति, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**प्रो. बी. एल. आहूजा** कुलपति, बोडोलैण्ड विश्वविद्यालय आसाम	**प्रो. पी.के.जैन** निदेशक, गीतांजलि प्रबंधन संस्थान, उदयपुर
प्रो. करुणेश सक्सेना अध्यक्ष (कुलपति), संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा	**प्रो. राजेश कोठारी** पूर्व अध्यक्ष (कुलपति), मनिपाल विश्वविद्यालय, जयपुर	**प्रो. जी. सोरल** पूर्व अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर अध्ययन MLSU, उदयपुर
प्रो. आनंद पालीवाल अधिष्ठाता, विधि महाविद्यालय, MLSU उदयपुर	**प्रो. के. बी. जोशी** अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं विज्ञान महाविद्यालय MLSU, उदयपुर	**प्रो. बी.एल. वर्मा** अधिष्ठाता, वाणिज्य महाविद्यालय MLSU, उदयपुर
प्रो. मदन सिंह राठौड़ अधिष्ठाता, प्रबंधन विभाग सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर	**प्रो. योगेश जोशी** अधिष्ठाता, प्रबंधन विभाग सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात	**प्रो. महेश दीक्षित** पाचार्य, मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर
प्रो. मलय पानेरी अधिष्ठाता, माणिक्य लाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर	**डॉ. अमित दशोरा** सह आचार्य, गलगोटियास विश्वविद्यालय, नोयडा	**डॉ. वसीम खान** समूह सभापति, आर.एन.टी. विवेकानंद ग्रुप ऑफ़ कॉलेजेस, कपासन

स्थानीय सलाहकार मंडल

डॉ अनुज्ञा पोरवाल उप पाचार्य, गुरु नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय	**डॉ. शशि चित्तौड़ा** अधिष्ठाता, शिक्षा विभाग, बी. एन. विश्वविद्यालय	**डॉ. खेल शंकर व्यास** अधिष्ठाता, शिक्षा विभाग, पेसिफिक विश्वविद्यालय
प्रो. डी. एन. दानी कार्यकारी सदस्य विद्या भवन सोसायटी	**प्रो. एम.पी. शर्मा** सेवानिवृत पाचार्य, विद्याभवन जी. एस. शिक्षक महाविद्यालय	**डॉ सुरेंद्र द्विवेदी** सेवानिवृत पाचार्य, निंबार्क शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर
डॉ. सरोज गर्ग पाचार्य, लोकमान्य शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय, डबोक	**डॉ. अल्पना सिंह** विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, MLSU, उदयपुर	**डॉ. प्रभा वाजपेयी** पाचार्य, राजस्थान महिला शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय
डॉ. मनीष सक्सेना पाचार्य, ज्योतिबा फूले शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय	**डॉ. हनुमान सहाय शर्मा** पाचार्य, निंबार्क शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर	**डॉ. प्रदीप पानेरी** पाचार्य, अंकुर बी. एड. महाविद्यालय, नाथद्वारा
डॉ. फरजाना इरफान पाचार्य, विद्याभवन जी. एस. शिक्षक महाविद्यालय	**डॉ. आशीष वया** निदेशक, महावीर ग्रुप ऑफ़ कॉलेज, भीडर	**डॉ. आदेश भटनागर** पाचार्य, इंडो अमेरिकन शिक्षक पशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर